DATE 25.11.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-14 'एक छोटी-सी बात' का शेषभाग)

2

पुस्तक - नवतरंग - 7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम पाठ-14 'एक छोटी-सी बात' का शेष भाग पढ़ेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस पाठ में पढ़ा था कि लेखक बिजली कट जाने से बहुत डरते थे। उनको लगता था यदि घर में बिजली नहीं होगी तो अँधेरा ही अँधेरा होगा, जिससे उन्हें बहुत डर लगता था। बस, इसी बात को ध्यान में रखकर वे झटपट बिजली का बिल भरने जाते हैं। लेकिन वहाँ जाकर बिल भराना था पर सरकारी कार्यालय का हाल देखकर वे निराश हो गए। ग्यारह बजे तक कोई भी बाबू अपनी सीट पर नहीं आया।

साढ़े ग्यारह बजे एक आदमी प्रकट हुआ। लेखक को लगा कि वह भोला बाबू हैं। मगर वे भोला बाबू नहीं थे। वह व्यक्ति भी लेखक की भाँति अपना बिल जमा कराने आने वाले रामदयाल थे। दोनों दुखी मन से बेंच पर बैठकर बातें करने लगे। लेखक वहीं बैठकर सोचने लगे कि भगवान राम ने वन जाते समय सीताजी से कहा था कि वक्त गुज़रते देर नहीं लगती। कुछ समय बाद दफ़्तर में बाबू लोग आ गए। सभी अपना बिल जमा कराने के लिए कतार बनाकर खड़े हो गए। कतार में लगभग चालीस लोग थे और उनमें लेखक सबसे आगे खड़े थे।

बाबू लोग आए पर उन्होंने लाइन में खड़े लोगों का बिल जमा न करके, चश्मा लगाकर अखबार पढ़ना शुरू कर दिया। दो-चार लोग उनके चारों तरफ़ खड़े हो गए और सुर्खियाँ पढ़ने लगे। कैशियर जो वहाँ बैठा था, वह भोला बाबू से कानाफूसी कर गोपनीय बातें करने लगा।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 25.11.24
PAGE No. 2

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-14 'एक छोटी-सी बात')-2

बीच-बीच में चश्मा हटाकर एक अर्थपूर्ण हँसी हँसते थे। साढ़े बारह बजे के करीब चाय आ गई और बाबू लोग चाय पीने लगे। दोपहर के खाने की छुट्टी (लंच) में करीब एक घंटा शेष था। लंच तीन बजे तक चलता था।

सब लोग बेसब्री के साथ कतार में खड़े थे, वे चिल्ला-चिल्लाकर पैसे लेकर बिल भरने को कह रहे थे। मगर भोला बाबू साबित करना चाहते थे कि सरकार पब्लिक का पैसा लेने के लिए कतई उत्सुक नहीं है। जैसे-तैसे करके वे अपनी गद्दी पर विराजे, उन्होंने पहले अपना टूटा हुआ चश्मा पोंछा, उसे पहना, फिर उसे उतारकर दुबारा साफ़ किया, कलमों में स्याही भरी, रबर की मुहरें इकट्ठी कीं, दो-चार छोटे-बड़े साइज़ की जम्हाइयाँ लीं। इसके बाद काम शुरू हुआ। काम में वे इतना कुशल थे कि सीधे-साधे बिलों पर भी कम-से कम आधा घंटा ज़रूर लगाते थे। लेखक ने उन्हें थोड़ा जल्दी करने को कहा तो वे बड़ी शांति से कहने लगे, "बाबू साहब, पौने दो रुपया पगार मिलती है, न ऊपर की आमदनी है और न नीचे की, तीन बच्चे हैं, बस से आना पड़ता है और बस से ही जाना पड़ता है, दमे का मरीज़ हूँ और तपेदिक होने वाली है। एक पाई की गड़बड़ हो जाए तो ऑडिटर नहीं छोड़ेगा। काम इतना है जिसके लिए आदमी एक है। नौकरी में तीन साल बचे हैं; ये भी बस इज़्ज़त से कट जाएँ। मैं तो बाबूजी हर वक्त यही सोचता हूँ कि आखिर इस मुल्क का क्या हश्र होगा?"

बच्चो! लेखक करीब दो बजे बिल भरी रसीद लेकर बाहर आए। बड़े साहब की सेकंड-हैंड कार दफ़्तर के भीतर प्रवेश कर रही थी। वह माली किस्म का इनसान सलाम ठोक रहा था और वह फ़र्राश किस्म का आदमी फाटक खोल रहा था।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:- सब बच्चे पाठ को दो बार पढ़ेंगे।
पृष्ठ-120 पर दिए संक्षेप और विस्तार से प्रश्नोत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner